विचारो मम

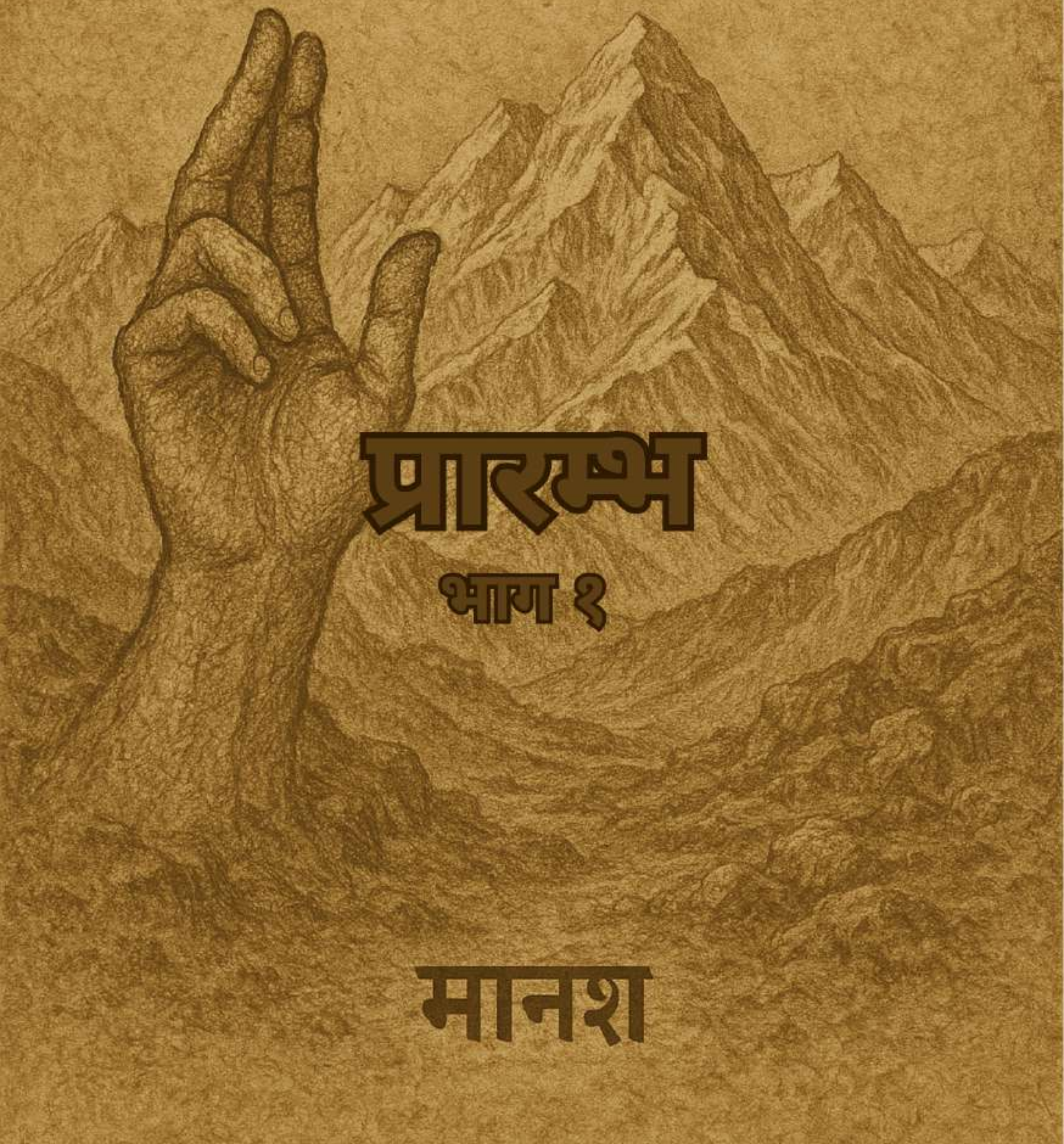

प्रारम्भ

भाग १

मानश

यह पुस्तक पूर्ण रूप से लेखक के निजी विचारों, अनुभवों और सामाजिक अवलोकनों पर आधारित है।
इसका उद्देश्य समाज में सकारात्मक सोच, मानवता, नैतिक मूल्यों और एकता की भावना को बढ़ावा देना है।

इस पुस्तक में उल्लिखित किसी भी कथन, उदाहरण या विषय का उद्देश्य किसी व्यक्ति, जाति, धर्म, समुदाय, संस्था, सरकार, व्यवस्था अथवा नीति की आलोचना या अपमान करना नहीं है।

यदि किसी को किसी भी अंश से व्यक्तिगत, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक या भावनात्मक रूप से आपत्ति हो, तो कृपया इसे लेखक के स्वतंत्र विचार-अभिव्यक्ति के रूप में देखें।

लेखक का उद्देश्य किसी प्रकार का द्वेष, मतभेद, घृणा, हिंसा या विद्रोह फैलाना नहीं है, बल्कि सिर्फ़ विचार-विनिमय और नैतिक सुधार का संदेश देना है।

यदि अनजाने में किसी को किसी भी प्रकार से ठेस पहुँची हो, तो लेखक क्षमाप्रार्थी है।

यह पुस्तक किसी के भी विरुद्ध कानूनी, धार्मिक या सामाजिक आक्षेप हेतु नहीं है। लेखक पूर्णतः उत्तरदायित्व से कहता है कि इसका उपयोग किसी भी नकारात्मक उद्देश्य से न किया जाए।

“यह पुस्तक पूरी तरह काल्पनिक विचारों पर आधारित है। इसका उद्देश्य किसी धर्म, जाति या मान्यता को ठेस पहुँचाना नहीं है। यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो कृपया इसे व्यक्तिगत न लें — लेखक क्षमाप्रार्थी है।”

मेरे दोस्त

इस पुस्तक और आज के समय में एक बड़ा अंतर है। मैं यहाँ सिर्फ उन लोगों की बात कर रहा हूँ जो पढ़े-लिखे और समझदार हैं। कृपया ध्यान दें, मैं केवल डिग्री लेने या किताबें रटने वालों की बात नहीं कर रहा — मेरा इशारा उन लोगों की ओर है जो वास्तव में समझ रखते हैं।

आज भारत में कई छोटे और बड़े वर्ग के ऐसे लोग भी हैं जो जातीय भेदभाव जैसी सामाजिक चुनौतियों को दूर करने के लिए सभी वर्गों का प्रयास सराहनीय है। वे केवल बड़ी-बड़ी बातें नहीं करते बल्कि अपने विचारों को व्यवहार में भी लाते हैं।

ऐसे लोग जब उनके बच्चे किसी अन्य जाति या वर्ग — चाहे वह कथित रूप से 'ऊँचा' हो या 'नीचा' — में विवाह करना चाहते हैं, तो वे अपने बच्चे की खुशी को प्राथमिकता देते हैं। वे बिना भेदभाव के विवाह की अनुमति दे देते हैं। वे न तो किसी वर्ग का मज़ाक उड़ाते हैं और न ही अगर किसी को ऐसा करते देखते हैं तो उसे सहन करते हैं।

मेरी बातों पर पूरा ध्यान देने के लिए धन्यवाद।

ये मेरे भारत के लोगों के लिए – एक विनम्र आह्वान

प्रिय भारतवासियों,
तुम्हारा हृदय महान है।
तुममें सीखने की क्षमता औरों से कहीं अधिक है।
हमें अपने देश को एकजुट करके रखना है —
और उसे विकसित राष्ट्र बनाना है।

क्या तुम मेरे साथ हो?

हमारे देश में जनसंख्या बहुत है,
आज भले ही सभी की भाषाएँ अलग-अलग हैं,
लेकिन दिल तो सबका एक ही है।

मैं कभी भी किसी भाषा का विरोधी नहीं रहा,
पर मैं एक बात विशेष रूप से कहना चाहता हूँ —

विकास के लिए हमें अपनी भाषा में ही काम करना चाहिए।
चाहे वह शिक्षा हो, विज्ञान हो, तकनीक हो या कोई व्यवसाय —
अपनी भाषा में सीखना, समझना और बढ़ना कहीं आसान है।

जब हम अपनी भाषा में सोचते हैं, तब हम बेहतर निर्णय ले पाते हैं।
हर गाँव का बच्चा जब अपनी भाषा में सशक्त बनेगा,
तभी सच्चा विकास संभव होगा।

मेरे प्यारे मित्रों, मेरा साथ दो।

इस विचार यात्रा में जुड़ो —
आप भारत की कोई भी भाषा बोलते हों — मुझसे जुड़ें।

हम मिलकर भारत को एक विकसित, आत्मनिर्भर, और सशक्त राष्ट्र बनाएँगे।

हम ही जनता हैं, हम ही नेता हैं,

हम ही भारत हैं — और हम ही कारण बनेंगे विकास का।

अगर भारत आगे नहीं बढ़ा, तो उसका कारण भी हम ही होंगे।

हम जी-जान लगा देंगे,

और भारत को पूर्ण रूप से विकसित कर देंगे।

ऐसा करके ही मरेंगे —

कि हमारे बच्चे जब जन्म लें,

तो जिस भाषा में वे बोलें,

उसी भाषा में पढ़ें, काम करें और आगे बढ़ें।

उन्हें किसी अन्य भाषा के पीछे भागने की जरूरत न पड़े।

मैं विचारूं तो विचार बने

तू संग हो तो बने सोच।

क्यों न संग मिल सोच लें

और धरती हो स्वर्गलोक।

अगर मैं अकेले सोचूँ तो केवल एक विचार उत्पन्न होता है, पर जब तुम मेरे सारथी हो, तो वह विचार एक बड़ी सोच में बदल जाता है। जब हम दोनों मिलकर सोचते हैं, तो क्यों न हम इस धरती को स्वर्ग बना दें?

हम इस बात को किसी भी कीमत पर नज़रअंदाज़ या नकार नहीं सकते कि मानव की शुरुआत कैसी हुई थी और आज के मानव में कितना अंतर आ चुका है। क्या वास्तव में परमात्मा ने शुरू से ही हमें ऊँची या नीची जातियों में बाँटा था क्या उस समय भी समाज में इस तरह के भेदभाव होते थे क्या हम शुरू से ही ऐसा भोजन करते थे जैसा आज करते हैं क्या हम उस समय भी इतने बुद्धिमान थे ये सारे प्रश्न मेरे मन में एक गहरी बेचैनी पैदा करते हैं। कभी-कभी सोचता हूँ कि कहीं मैं सोचकर गलती तो नहीं कर रहा क्या मुझे केवल वर्तमान को ही सच मानकर बिना पीछे देखे उसे ही स्वीकार

कर लेना चाहिए आज तुम एक ऐसे व्यक्ति की भावनाएँ पढ़ रहे हो जो विचारों में डूबा हुआ है।

कैसे कहु क्या सच लिखो या झूठ लिखो बेईमान
लगे सच झूठ सब एक सो
ये जाने वही जिसके हाथ लिखन की कमान।

यह श्लोक व्यक्ति के मन की असलियत और लिखने के तरीके पर सवाल उठाता है। इसका मूल प्रश्न यह है कि जो व्यक्ति कुछ लिख रहा है क्या उसने सच लिखा है या झूठ

1. कैसे कहु क्या सच लिखो या झूठ लिखो बेईमान

यह लाइन यह पूछती है कि जब एक व्यक्ति कुछ लिखता है तो क्या वह सच लिख रहा है या कुछ झूठ बेईमान यहाँ लिखने वाले की ईमानदारी को दर्शाता है और यह पूछता है कि लिखने वाले ने सच लिखा है या नहीं।

2. लगे सच झूठ सब एक सो

इसका मतलब है कि सच और झूठ का फर्क हमेशा साफ नहीं होता। कभी-कभी जो एक व्यक्ति के लिए सच है दूसरे

व्यक्ति के लिए वह झूठ लग सकता है। यह सब व्यक्ति के नजरिये और सोच पर निर्भर करता है।

3. ये जाने वही जिसके हाथ लिखन की कमान

यह लाइन कह रही है कि सिर्फ वही व्यक्ति जान सकता है जो लिख रहा है कि उसने सच लिखा है या झूठ लिखन की कमान का मतलब है लिखने वाले के हाथ में जो ताकत होती है वह उसके लिखने के तरीके को निर्धारित करती है।

प्रारंभ

एक शुरुआत जो धरती को पूरी तरह बदल देने वाली थी।
उस जीव का जन्म होने वाला था जो पृथ्वी को पूरी तरह से बदल सकता था।
यह शायद पृथ्वी की सबसे बड़ी गलती हो या उसकी सबसे बड़ी सफलता। उसने ऐसे जीव को जन्म दिया जो समय के साथ उसकी देखभाल कर सके न केवल चक्र को बनाए रखे बल्कि उसे बदलने की क्षमता भी रखे।

कई वर्षों तक सब कुछ सामान्य जैसा ही दिखता रहा

पर उस जीव में एक विशेष शक्ति थी —

वह चीजों को सीखता और उन्हें अगली पीढ़ी में डाल देता जिससे एक ही गलती बारबार नहीं दोहराई जाती।

यह एक नई और प्रभावशाली शक्ति थी।

मानव ने पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग करना सीख लिया था।

अब वह प्रारंभिक अवस्था से अलग हो गया था।

वह चार के बजाय दो पैरों पर चलता था

प्राकृतिक आपदाओं से खुद की रक्षा करता था

उसी दल में से एक समूह हिमालय की ओर चला गया। उन्हें जीवों से बहुत लगाव था।

वे उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाते उनके साथ सही व्यवहार करते थे
बल्कि उनकी रक्षा भी करते थे।
वे दर्द महसूस करने वाले जीवों को नहीं खाते थे।
उन्होंने हिम की ऊँची चोटियों को अपना घर बना लिया था
और खुद को हर तरीके से समृद्ध बनाने लगे।

□ हिमालय की दुनिया

जब वह दल लगभग 500 लोगों की जनसंख्या के साथ हिमालय पहुँचा
तो वे कुछ मूलभूत बातें पहले से जानते थे —
जैसे आग का उपयोग कैसे करना है, लकड़ी से घर कैसे बनाना है आदि।
उस समाज में कोई भेदभाव नहीं था सब एक समान थे। अंतर केवल

ताकतवर और निर्बल का था लेकिन सभी एकदूसरे की मदद करते थे। सभी लोगों ने मिलकर लकड़ी के सुंदर और मजबूत घर बनाए। ये घर देखने में ही सुंदर नहीं थे

बल्कि कई वर्षों तक टिकाऊ भी रहते थे। शुरुआत में उन्हें कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा लेकिन समय के साथ उन्होंने वहाँ जीना सीख लिया।

अब वे हिमालय की अनेक जड़ीबूटियों को पहचानते थे और उनका उपयोग जीवन में करने लगे थे।

अब हम यह देखेंगे कि —

उनकी दिनचर्या कैसी थी

वे क्या खाते थे

उनका समाज कैसा था

वे किसकी पूजा करते थे

लड़ाइयाँ कैसे होती थीं

शिक्षा कैसे दी जाती थी

और लोग औसतन कितने वर्ष जीते थे।

लंबे समय के अनुभव के बाद लोगों ने यह समझ लिया था कि केवल पेट भरना ही नहीं बल्कि अच्छे और सेहतमंद भोजन की भी आवश्यकता होती है। उनका मुख्य कार्य था दिनभर भोजन की खोज करना और रात को पूरा परिवार एक साथ बैठकर भोजन करना। उन्होंने जौ, गेहूं, कोदो, कुटकी, रागी, कुट्टू, राजमा, और कुलथ जैसी फसलें उगाईं।

साथ ही आलू और अन्य खाद्य पौधों को भी अपनाया। वे जंगली अखरोट, खुबानी, जंगली बेरी जैसे हिसालू का फल, बिच्छू घास, लिंगुड़ा और गुच्छी जैसी प्राकृतिक चीज़ें भी खाते थे।

यहाँ पुरुषों के साथ-साथ महिलाएं भी समान रूप से कार्य करती थीं। पुरुष महिलाओं को सारे अधिकार देते थे और उन्हें हर कार्य सिखाते थे जैसे खेती करना औजार चलाना आदि।

बच्चों के लिए एक अलग शिक्षा गृह था जो भी समुदाय का व्यक्ति कुछ नया सीखता वह जाकर बच्चों को सिखाता। एक व्यक्ति हमेशा बच्चों को सिखाने की ज़िम्मेदारी निभाता। उन्हें जड़ी-बूटियाँ पशुपालन खेती नई तकनीकें आदि सिखाई जाती थीं। समाज को दो वर्गों में बाँटा गया था – अनाचार वर्ग और सदाचार वर्ग। दोनों वर्गों को अलग-अलग स्थान मिले थे

लेकिन उनके बच्चे एक ही स्कूल में पढ़ते थे।

व्यस्क होने के बाद किसे किस वर्ग में रहना है यह उनके चालचलन और उन पर चल रहे मुकदमों से तय होता था। अपराधियों को सज़ा दी जाती थी।

दोनों वर्गों में शिक्षा का कोई अंत नहीं था। लोग जीवन भर पढ़ते और सीखते रहते थे। यह शिक्षा प्रतिदिन सुबह 7 से 9 बजे तक चलती थी।

यहाँ के लोग एक विशेष हिमालयी जड़ीबूटी जिसे वे "संजीव बूटी" कहते थे खाते थे जिससे उनकी आयु बहुत अधिक हो जाती थी लगभग 500 वर्षों तक।

समाज से किसी भी व्यक्ति को समूह से बाहर नहीं जाने दिया जाता था जब तक कि वह **जानकार** घोषित न कर दिया जाए। जानकार का कार्य होता था बाहरी दुनिया की परिस्थितियों को जानना और उसे समुदाय के समक्ष लाना।जब यह समुदाय बाहरी समाज से अलग हुआ तब उनके पास किसी विशेष देवता या भगवान की कोई अवधारणा नहीं थी। परंतु समय के साथ उन्हें यह समझ आने लगा कि **पेड़-पौधे** उनके जीवन के लिए कितने आवश्यक हैं। उन्होंने पेड़ों की पूजा एक अलग ही रूप में प्रारंभ की – वे प्रतिदिन पेड़-पौधों की देखभाल करते उन्हें पानी देते और खेतों की रक्षा करते। यही उनका पूजापाठ था। इसके साथ वे सामूहिक रूप से गीत गाते रहते थे।

देखो-देखो कैसे खिले हैं फूल

हवा में घुली है जीवन की धूल।

पेड़ों की छाया नदियों का गान
इन्हीं में बसता है हमारा भगवान।

हर सुबह सूरज हमें प्रणाम करे
चाँदनी रातें हमें विश्राम करे।
मिट्टी से मिलती है हर सौगात
यही है हमारे दिल की बात।

हम नकारते नहीं किसी भी राह को
पर चुनी है हमने प्रकृति की चाह को।
हर आस्था का है अपना स्थान
हमारा है धरती से प्रेम का ज्ञान।

उनके लिए यही भक्ति थी — प्रकृति की सेवा और संरक्षण।

जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि बाहरी दुनिया में अनेक प्रकार के **भगवान** हैं तो उन्होंने इस विषय को गंभीरता से विचारते हुए एक निर्णय लिया — हमें किसने बनाया इसका ज्ञान हमें नहीं है और हम इतने सक्षम नहीं कि इन बातों की गहराई समझ सकें।हम प्रकृति को ही सृजनकर्ता मानते हैं। उनके समाज में होने वाली लड़ाइयाँ विचारआधारित होती

थीं शारीरिक नहीं। उनमें एक व्यक्ति विवाद का समाधान करता और एक अन्य निर्णय की घोषणा करता। वे लगातार नए-नए औजार बनाते – जैसे तीरकमान भाले – और बाहरी दुनिया के हथियारों की

नकल भी करते। कभी-कभी तो वे बाहरी हथियारों से भी अधिक शक्तिशाली शस्त्र बना लेते थे।जनसंख्या पर नियंत्रण रखा जाता था। चूंकि उनकी मृत्यु जल्दी नहीं होती थी इसलिए जब किसी परिवार में अधिक बच्चे हो जाते तो उनमें से कुछ को एक विशेष उम्र के बाद बाहरी दुनिया में भेज दिया जाता था। माँएँ दुख से चिल्लाती थीं लेकिन समाज ने बाहरी दुनिया में भी उनके लिए एक सुरक्षित व्यवस्था बना रखी थी। उनके अनुसार यह आवश्यक था – क्योंकि यदि जनसंख्या बढ़ जाती तो उनका रहस्यपूर्ण समुदाय बाहरी दुनिया की नजरों में आ जाता जो वे नहीं चाहते थे। वे प्रपंच जैसी बुराइयों से दूर रहकर ही अपनी भलाई समझते थे।

जब कोई व्यक्ति मरता तो

“प्रकृति में विलीन कर दिया जाता था।”

कई हजारों साल बाद बहुत कुछ बदल चुका था। रहने का तरीका पूरी तरह विकसित हो गया था लेकिन यह स्थान अब भी एक छुपा हुआ गाँव था। हालाँकि वह अब अत्यधिक विकसित हो चुका था।

अब वे आधुनिक युग की “गन” जैसी तकनीकों को भी जान चुके थे लेकिन उनकी संरचना बिलकुल अलग थी और वे उन्हें केवल मजबूत लकड़ियों से बनाया करते थे जिससे वे जंगली जानवरों से अपनी रक्षा करते। उन्हें अब औषधीय पौधों की गहरी जानकारी थी और वे इनके ऊपर कई पुस्तकें भी लिख चुके थे। वे किसी भी प्रकार की बीमारी को जड़ से खत्म करने में सक्षम हो चुके थे।

उन्होंने सतही घरों को मिटाकर ज़मीन के बहुत नीचे घर बना लिए थे ताकि वे किसी की निगाह में न आएँ। अब उन्होंने जड़ी-बूटियों के माध्यम से रात में देखने की क्षमता भी प्राप्त कर ली थी। इतना ही नहीं अब वे कभी थकते नहीं थे क्योंकि उन्होंने इसके लिए भी विशेष औषधि तैयार कर ली थी। उनके शरीर इतने शक्तिशाली हो गए थे कि उनकी बुजाएँ 1000 किलो तक का भार एक हाथ से उठा सकती थीं और उनका कद 8-9 फीट या उससे भी अधिक हो जाता था,

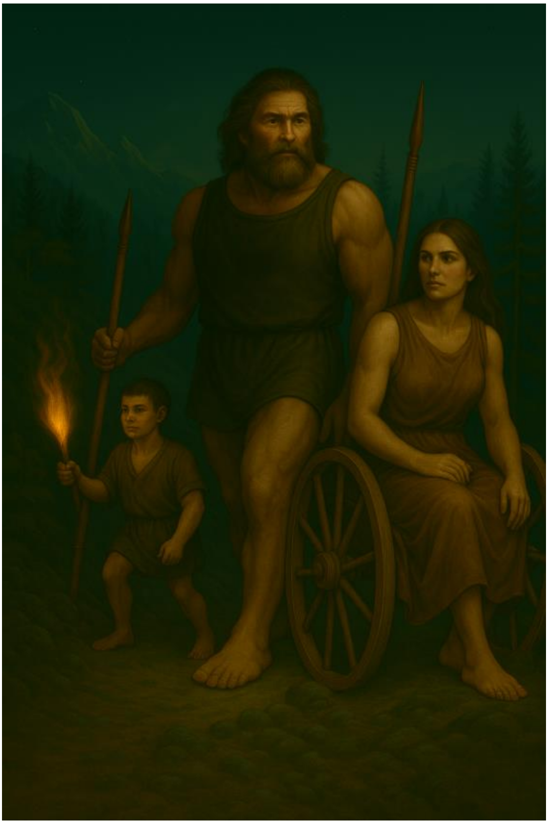

लेकिन ऐसा तब ही होता जब उन्हें निश्चित आयु में विशेष जड़ी-बूटियाँ दी जाती थीं।

एक रात की बात रहे जब घना अंधेरा छाया था
तुलसा जैसा मुलायम चेहरा जब दुनिया में आया था।
बड़ी-बड़ी पवन की लहरों का घेरा था

न झलिम पलभर ठहरा था।

ना छिपने को था कोई स्थान

माँ कर रही थी खून का स्नान।

एक बाढ़-लहर सी दौड़ थी

माँ की टूटी साँस की डोर थी।

बच्चा नदी में बह गया पर एक किनारा गेह गया।

बच्चा चीखा तो कोई आया फिर चुपके से घर लाया।

रंग गेहुआ चमक निराली कानों

में थी जन्म से बाली।

चेहरा तुलसा सा छाया था तभी तुलसल वह कहलाया था।

"एक रात की बात रहे"

यह कविता की शुरुआत है जहाँ बताया गया है कि एक गहरी डरावनी रात थी। वातावरण में सन्नाटा और रहस्य था।

1. **"तुलसा जैसा मुलायम चेहरा जब दुनिया में आया था"**

   एक नवजात शिशु जन्म लेता है जिसका चेहरा अत्यंत कोमल और सुंदर है — ठीक किसी तुलसा कोमल सौम्य प्रतीक जैसा।

2. “पवन की बड़ी-बड़ी लहरें”

तूफ़ानी हवाओं की कल्पना है — जैसे पूरा वातावरण प्रकृति की उथल-पुथल से भरा हो।

3. “माँ कर रही थी खून का स्नान”

शिशु का जन्म अत्यंत कठिन परिस्थिति में हुआ और माँ की हालत गंभीर थी — शायद प्रसव के समय माँ की मृत्यु हो गई।

4. “बाढ़-लहर सी दौड़ थी”

अचानक बाढ़ आ जाती है माँ की साँस टूट जाती है — बच्चा बह जाता है।

5. “बच्चा नदी में बह गया पर एक किनारा गेह गया”

बच्चा बहकर एक गुप्त किनारे तक पहुँच जाता है — ‘गेह जाना’ यानी उस किनारे ने उसे स्वीकारा या थाम लिया।

6. “बच्चा चीखा तो कोई आया”

बच्चा रोता है — तभी एक व्यक्ति आता है।(वह व्यक्ति था — भारत)

7. “फिर चुपके से घर लाया”

वह व्यक्ति बिना किसी को बताए उस बच्चे को अपने पास ले जाता है।

8. “रंग गेहुआ चमक निराली”

बच्चा सुंदर गेहुआ रंग का था और उसमें अलग ही चमक थी।

9.“**कानों में जन्म से बाली**”

जन्म से ही उसके कानों में बालियाँ थीं — यह उसे विशिष्ट बनाता है। उसके चेहरे की कोमलता देखकर उसका नाम तुलसल रखा गया।

शिशु को देख आंख भर आई
बिन जनक जान लयो अपनाई।
जाए घर भार्या (पत्नी का नाम देवी)दियो थमाई
लियो प्रिये लाल लाचार बिचारो
जाये मान लाल हम दिए सहरो
एक लाल एक लाली हमाई
चाहे दुनिया को देयो बताई
न जानू लाल कहा ते आयो
कह भारत माँ को ढुढन धायो

तब देवी यु उठ बोली

पिया सुख बड़ो जो लाल घर आया
बहार घोर अंधेरा छाया

स्वामी जी रात बड़ी मोये निसाचर लागे

निशि में बड़े निसाचर जागे

थमे आपदा कल चले जाने

शिशु माता की खोज लगाना

सुता मेनिका चल घुटूयन आयी

पित उठा गोद दिए आन लाल की खूब बधाई

शिशु को देख आंख भर आई

बिन जनक जान लयो अपनाई।

जब भारत ने उस छोटे बच्चे को देखा उसकी आंखें भर आईं।

वह बच्चा माता-पिता विहीन था — लेकिन भारत ने उसे बिना कोई सवाल किए दिल से अपना मान लिया।

उसे लगा जैसे इस मासूम को अब उसे ही सहारा देना होगा।

जाए घर भार्या दियो थमाई

लियो प्रिये लाल लाचार बिचारो

भारत बच्चे को अपने घर ले आया और अपनी पत्नी देवी को सौंप दिया।

देवी ने उस मासूम असहाय बालक को प्रेम से गोद में लिया और उसे सहज ही अपनाया।

एक मां की ममता जैसे उस पल फूट पड़ी हो।

जाये मान लाल हम दिए सहरो

एक लाल एक लाली हमाई

चाहे दुनिया को देयो बताई

भारत ने कहा —— हमारे पास एक बेटी तो पहले से है और अब ये बेटा भी है।

दुनिया अगर कुछ पूछे —— तो साफ-साफ बता देना कि ये हमारे ही बच्चे हैं। खून का रिश्ता नहीं दिल से बने रिश्ते ही असली होते हैं।

न जानू लाल कहा ते आयो

कह भारत माँ को ढूंढन धायो

भारत कहता है —— मुझे नहीं मालूम ये बच्चा कहां से आया लेकिन इसका कहीं कोई माँ जरूर होगी।

और फिर वह बिना रुके उसी रात बच्चे की माँ को खोजने निकल पड़ता है —— एक सच्चे इंसान की तरह इंसानियत को निभाते हुए।

तभ देवी यु उठ बोली

पिया सुख बड़ो जो लाल घर आया बहार घोर

अंधेरा छाया

"ये लाल हमारे घर आ गया ये सुख छोटा नहीं है बहुत बड़ा है
लेकिन बाहर घना अंधेरा छा गया है।"
यहाँ देवी का स्वर आभार और चिंता दोनों से भरा होता है।

स्वामी जी रात बड़ी है —

मुझे ये रात निसाचर सी लगती है
इस समय बड़े-बड़े राक्षस जागते हैं देवी कहती है —
"आप कल चले जाते तो अच्छा होता

लेकिन आप तो आप हैं — किसी की पीड़ा देखी नहीं जाती।" वो डरती है लेकिन अपने पति के फैसले को समझती भी है।

थमे आपदा तो कल चले जाने शिशु माता की खोज लगाना

"अगर संकट टल जाए तो कल चले जाना
लेकिन आज रात में मत जाइए मुझे बहुत डर लग रहा है।"
देवी का यह डर एक पत्नी की चिंता उसका अकेलापन सब कुछ कह देता है।

सुता मेनिका पास आ गई

उनकी तीन साल की बेटी मेनिका दौड़ते हुए आई और पिता की गोद में चढ़ गई। भारत ने उसे गोद में लेकर बच्चे की ओर इशारा किया और कहा — "बधाई हो बेटी तुम्हें अब

एक भाई मिल गया है।"
परिवार अब पूर्ण लगने लगा था।

और बच्चे की माँ को ढूंढने के लिए निकल जाता है उस समय बिना माँ-बाप वाले बच्चे को यूँ सीधे अपना मान लेना समाज में सहज नहीं माना जाता था।

लेकिन भारत ने उस बच्चे को देखते ही उसे दिल से अपना मान लिया और तुरंत घर ले आया। हाँ वह इस उम्मीद में था कि अगर बच्चे के माँ-बाप मिल जाएँ तो वह उन्हें सौंप देगा।

पर जब तक कोई नहीं मिलता तब तक वह ही उसका सहारा है — यही सोचकर उसने उसे बिना देरी के अपना लिया।

यह फैसला समाज की परवाह किए बिना इंसानियत के रास्ते पर चलने का था।

कुछ समय पश्चात भारत उस रात को नदी के आस-पास बच्चे की माँ को ढूँढने में लग गया।

भारत माँ को ढूँढते-ढूँढते नदी के किनारे-किनारे चलता गया।

नदी अपने पूरे उफान पर थी।

उसे जंगल में कुछ हलचल दिखी।

जैसे ही अंदर गया तुरंत एक बिजली का ज़ोरदार प्रहार उसे दबोच लेता है और उसकी तुरंत मृत्यु हो जाती है।

देवी पूरी रात बिना सोए अपने पति के इंतज़ार में बैठी रही रोती रही। सुबह हुई प्रकृति डंडी हुई। वह तुरंत नदी किनारे निकल पड़ी। ढूँढते-ढूँढते शाम हो गई।

तुलसल की ज़िम्मेदारी अब उसकी बेटी मेनिका पर थी जो अभी महज ३ साल की थी। रात हो गई चलते-चलते पैर जवाब दे रहे थे। पर दिल कहां थम रहा था। दिल से हुकारे निकल रहे थे। वह रोती जाती ढूँढती जाती। बिना कुछ खाए-पिए बस चली जा रही है और पति को पुकारती जा रही है। तभी पत्थर से ठोकर खा के गिर गई।

तभी पत्थर से कहती है

ए शिला कछु बोल दे यदि देखे हो मेरे नाथ

अबे कछु साल शादी भये पीले मेरे हाथ।

ए री डाली तू बता ये चलत हवा क्या बोले

कैसे होए घरभरण-पोषण अपत्य घुटुआं-घुटुआं डोले।

अरे तोते बड़े बाचाल, तू तो बोलन जाने

तू तो कर कछु बात ,जा रे उड़ जा कह मित्रों से मोये पिया मिलन की आश

"ए शिला कछु बोल दे यदि देखे हो मेरे नाथ"

अर्थ :

हे पत्थर अगर तूने मेरे प्रियतम पति को देखा है तो कुछ बोल दे। यह एक मौन वस्तु से संवाद है — जो दर्शाता है कि दुख इतना गहरा है कि इंसान अब निर्जीव चीज़ों से उम्मीद लगाने लगा है।

"अबे कछु साल शादी भये पीले मेरे हाथ।"

अर्थ :

अभी तो कुछ ही साल हुए हैं हमारी शादी को अभी तो मेरे हाथों की मेहंदी भी नहीं छूटी।
यह पंक्ति नवविवाहिता की करुणा और जीवन की अधूरी शुरुआत का बोध कराती है।

"ए री डाली तू बता ये चलत हवा क्या बोले"

अर्थ :

हे डाल पेड़ की शाखा तू ही कुछ बता — क्या ये बहती हवा कुछ कह रही है
यह पंक्ति गवाही है उस स्त्री की हालत की जो प्रकृति से जवाब माँग रही है कैसे होए घर भरण-पोषण अपत्य घुटुआं-घुटुआं डोले।

अर्थ :

कैसे चलेगा घर कैसे पालूँगी बच्चों को
अभी हमारे बच्चे बहुत छोटे है। अब कौन सहारा देगा यहाँ
वो अपने दायित्वों अकेलेपन और असहायता की बात कर
रही है।

अरे तोते बड़े बाचाल तू तो बोलन जाने

अर्थ :

अरे तोते तू तो बहुत बात करता है तू तो बोलना जानता है
अब तू ही कुछ बोल — एक पक्षी से बात करने की ये
कल्पना स्त्री की मानसिक पीड़ा की पराकाष्ठा दिखाती है।

तू तो कर कछु बात जा रे उड़ जा कह मित्रों से मोये पिया मिलन की आश

अर्थ :

तू ही कुछ कर — उड़ जा और जाकर तेरे मित्रों से कह देना
कि मुझे अपने प्रियतम पिया से मिलने की आश बाकी है।
यहाँ उसकी अंतिम उम्मीद भी एक उड़ते हुए तोते से बंधी है
कि शायद कोई कहीं संदेश ले जाए —
"प्रेम अभी शेष है और इंतज़ार अब भी बाकी है।"

तभी उसका पैर अड़ जाता है और वह गिर जाती है।
उसकी आंखें फटी की फटी रह जाती हैं मुंह सूख जाता है
दिल शांत हो जाता है कोई भाव मुंह से झलक नहीं रहा होता है। हाथ
सुन्न पड़ जाते हैं। कुछ समय बाद उसके सूखे होठों से निकल पड़ता है

ओ स्वामी कैसे पालूँगी छोड़ गए दो डार

खुद तो तीर खड़े हुए हम कैसे पाए पार ।

ओ स्वामी कैसे पालूँगी

हे पिया अब मैं इन बच्चों को कैसे बड़ा कर पाऊँगी
आप चले गए पीछे दो मासूम जिंदगियाँ मेरे हवाले कर गए।
अब ये बोझ मेरा है — और मैं अकेली... तुम होते तो बात कुछ और
थी। अब हर सांस सवाल बन गई है।

छोड़ गए दो डार खुद तो तीर खड़े हुए

आप तो सब कुछ छोड़कर उस पार चले गए — जैसे कोई नदी पार करके
किनारे खड़ा हो गया हो। पर मुझे सौंप गए ये दो नन्हीं शाखाएँ जिनमें हर
दिन तुम्हारी झलक नजर आती है। अब इन्हें संभालना है —
बिना तुम्हारे सहारे सिर्फ़ अपने आँसुओं के साथ।

हम कैसे पाए पार

अब बताओ इस ज़िंदगी की नाव अकेले कैसे पार करूँगी मैं कहाँ जाऊं किससे कहूँ हर रास्ता अधूरा लगता है हर जवाब तुम्हारे बिना खाली।

अब तो बस एक उम्मीद है —— वो भी थकी हुई।

रो-रो कर देवी का बुरा हाल हो जाता है क्योंकि वह उसे उठा नहीं सकती थी। बिना पति के वह घर लौट आती है।

और सुबह आदमी बुला के लाश को घर में ले आती है।

उस समय कई धर्म बन भी रहे थे और मिट भी रहे थे।

लोग उस रास्ते की ओर बढ़ते जहाँ उन्हें शांति अमन और एक बेहतर ज़िंदगी की उम्मीद दिखती। कई जनजातियों ने खुद धर्म अपनाया —— पर कईयों को जबरन अपनाना पड़ा।

धर्म बनाना कोई आसान बात नहीं थी ——

जो धर्म पहले से मौजूद थे वे नए धर्मों का खुलकर विरोध करते।

उस दौर में

इन्हीं सब झंझावातों के बीच

सालों तक यह टकराव चलता रहा।

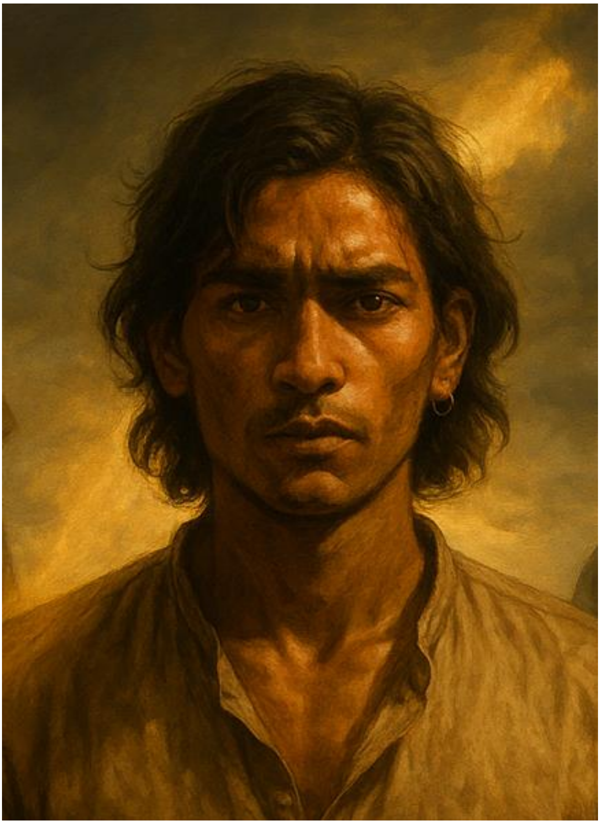

अब तुलसल 20 वर्ष का हो चुका है।

उसकी ज़िंदगी...

जैसे दुखों का एक भारी बोझ बन गई है।

अब हम एक-एक करके जानेंगे —

तुलसल की माँ

उसकी बहन मेनिका

और स्वयं तुलसल की ज़िंदगी की सच्चाइयाँ —
जो हर दिन संघर्ष दर्द और उम्मीद के धागों से बुनी जाती हैं।

उसके बारे में पता करते है।

चूँकि जब भारत देवी को अकेला छोड़कर गया तब उनका
एक विशेष काम था – वे मछुआरे कहलाते थे।
चलो पहले तुम्हें उस समाज की थोड़ी झलक देता हूँ।
क्योंकि यह किताब मन से लिखी गई है इसलिए मैं किसी
धर्म या जाति को इसमें नहीं दिखाना चाहता।
और न ही मेरा उद्देश्य किसी को ठेस पहुँचाना है।

उस समय जो धर्म थे उनमें से एक धर्म था – दिव्य।
यह धर्म शुरू में बहुत ही फैला-फूला।
समानता, परमात्मा, कला आदि के कारण कई समुदायों और
जनजातियों ने इसे अपना लिया।
परंतु कुछ लोगों ने ईश्वर, ज़मीन और धन का प्रयोग कर इस धर्म का मूल
रूप ही बदल डाला।

अब धर्म दो वर्गों में विभाजित हो गया – उच्च वर्ग और निम्न वर्ग।
उच्च वर्ग में राजा सैनिक पुजारी और व्यापारी आते थे
और निम्न वर्ग में सेवक।

उच्च वर्ग का काम होता था – निम्न वर्ग से अपने काम करवाना और उसकी कुछ कीमत अदा करना।

उच्च वर्ग के पास ज़मीनें होती थीं और दूसरों को डराने-धमकाने की ताक़त भी। शुरुआत में यह तय नहीं होता था कि कौन उच्च है और कौन निम्न —– यह जन्म पर आधारित नहीं था।

परंतु जैसे-जैसे समय बीतता गया पीढ़ी दर पीढ़ी यह नियम बना दिया गया कि जो उच्च वर्ग में जन्मा है वही श्रेष्ठ है —–

भले ही वह डरपोक हो या अज्ञानी उसे श्रेष्ठ ही माना जाएगा।

और हद तो तब हो गई जब इस भेदभाव को परमात्मा की इच्छा बताकर सही ठहराया गया। क्योंकि निम्न वर्ग की संख्या अधिक थी तो विद्रोह के डर से उन्हें शिक्षा से वंचित कर दिया गया। उनसे उनकी रक्षा का अधिकार छीन लिया गया।

शुरुआत में उन्हें यह ठीक लगा कि कोई और उनकी रक्षा कर रहा है पर जब वही रक्षक ज़ालिम बन गए तब उन्हें अपनी भूल का एहसास हुआ —– लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अब जीवन के हर कार्य के लिए उन्हें उच्च वर्ग की सहायता लेनी पड़ती।और ताकि वे विद्रोह न करें यह प्रचार किया गया —–

निम्न वर्ग ईश्वर की सज़ा है बुरे कर्मों के कारण ही तुम वहाँ जन्मे हो।

धीरे-धीरे निम्न वर्ग को भी इस गुलामी की आदत हो गई।

अब कोई विद्रोह नहीं, चापलूसी आम बात बन गई थी।

उन्हें यह भी दिखना बंद हो गया कि जिन कारणों से उन्हें निम्न कहा गया था वे अब पूरी तरह ग़लत साबित हो चुके हैं।

शुरुआत में निम्न वर्ग बस एक कामकाजी समूह था —
जिसका जन्म से कोई लेनादेना नहीं था। जो श्रम करता वह निम्न जो व्यापार करता या सेना में होता या सरकार से जुड़ा होता वह उच्च। बस इतना ही अंतर था। पर अब यह वर्गभेद धर्म से जुड़ गया था। जब कुछ लोगों ने विरोध किया — उनके सिर काट दिए गए। क्योंकि निम्न वर्ग के पास न तो सेना थी न हथियार। वे उच्च वर्ग की छाया में जीना सीख गए। पर वे भूल गए कि — लोग उंगली पकड़ाते थे तो वे पूरा हाथ पकड़ लेते थे। यहाँ निम्न वर्ग की सबसे बड़ी भूल यह रही कि उन्होंने समय रहते हथियार नहीं उठाए। उन्होंने हर परिस्थिति में शांति का मार्ग चुना —
जो उन्हें सहनशील नहीं कायर बना बैठा।
तानाशाहों ने इसी कमजोरी पर राज किया।

धीरे-धीरे निम्न वर्ग वस्तु बन गया।
उन्हें बेचा जाने लगा।

छोटीसी गलती पर मृत्यु दंड दिया जाने लगा।
धर्म का परचम तक गिर गया।

अब निम्न वर्ग को लगने लगा कि उनकी ज़िंदगी एक श्राप है
या उच्च वर्ग की रहम पर टिकी कोई सज़ा।

कई लोगों ने तब दूसरे धर्म अपनाए।

देवी के पति की मृत्यु के बाद
उनकी ज़मीन पर उच्च वर्ग के लोगों ने कब्ज़ा कर लिया —
और इसे अपनी शान समझा।

देवी अब उच्च वर्ग के घरों में काम करने जाती।
उसके साथ हर दिन बुरा आचरण किया जाता।

जब उसने विरोध किया और कहीं और स्थान बदलना चाहा
तो उसे बच्चों की हत्या की धमकी दी गई।

यह आवश्यक नहीं कि कोई वर्ग चाहे वह उच्च कहा जाए या निम्न पूर्णतः भ्रष्ट अत्याचारी या दुराचारी हो। यदि किसी गाँव में कुछ लोग गलत कार्य करें — जैसे बाहर से आने वालों को पीटना उन्हें नुकसान पहुँचाना — तो उस गाँव का नाम बदनाम हो सकता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि उस गाँव का हर व्यक्ति वैसा ही है।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब गाँव का कोई सामान्य व्यक्ति जिसने कोई गलती नहीं की फिर भी उस समूह का हिस्सा होने के कारण शक के घेरे में आ जाता है। दोष सिर्फ उस व्यक्ति का नहीं है जिसने गलत किया दोष उस समाज का भी है जो चुप रहा। यदि गाँव के अन्य लोग उन बुरे लोगों को रोकने या सुधारने का प्रयास नहीं करते तो वे भी परोक्ष रूप से दोषी बन जाते हैं।

ऐसी ही स्थिति समाज के हर स्तर पर देखी जा सकती है। यदि कोई 'उच्च वर्ग' कहलाने वाला अन्य वर्गों पर अत्याचार करता है और उसी वर्ग के शेष लोग चुप रहते हैं कोई सामूहिक पहल नहीं करते तो फिर जब उन पर उंगली उठे तो यह आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

निष्कर्ष यह है — अगर आप एक वर्ग समाज या समुदाय का हिस्सा हैं और आपके बीच कुछ लोग गलत कार्य कर रहे हैं तो यह आपकी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि आप उस अन्याय का विरोध करें। नहीं तो इतिहास सिर्फ उन्हें दोषी नहीं ठहराएगा — वह आपको भी दोष का भागी मान सकता है।

कुछ समय बाद हालात और भी ख़राब हो गए। उसकी बेटी मेनिका के साथ दुष्कर्म हुआ जिसके चलते उसने आत्महत्या कर ली। देवी ने इस अन्याय का जोरदार विरोध किया
और वह राजा के दरबार तक जा पहुँची। यही उसकी सबसे बड़ी ग़लती थी। इसके बाद
तुलसल को व्यापारियों के हाथों बेच दिया गया
और देवी की हत्या कर दी गई।

तुलसल को जिस व्यापारी ने खरीदा था वह उसे राजस्थान आज के भावनगर शहर के पास ले जा रहा था। उस समय हज़ारों साल पहले वहाँ से पानी के जहाज़ चला करते थे। व्यापारी का जहाज़ सरस्वती नदी के मुहाने से गुजर रहा था। यह नदी आज तो सूख चुकी है लेकिन उस ज़माने में यह इतनी विशाल थी कि इसमें बड़ेबड़े जहाज़ तैरते थे। नदी का पानी इतना साफ़ था कि उसमें सूरज की रोशनी नीचे तक

जाती दिखाई देती थी। तभी अचानक आसमान काला हो गया। हवा ने तेज़ रफ्तार पकड़ ली और पल भर में भयंकर तूफ़ान आ गया। लहरें जहाज़ को मारने लगीं। व्यापारी और उसके आदमी डर के मारे चिल्लाने लगे लेकिन तुलसल चुपचाप एक लकड़ी के टुकड़े को पकड़े खुद को बचाने की कोशिश कर रहा था।

फिर वही हुआ जिसका किसी ने अनुमान नहीं लगाया था—जहाज़ डूब गया।

तुलसल बेहोश हो गया। जब उसकी आँखें खुलीं तो वह हिमालय के किसी दुर्गम किनारे पर पड़ा था। चारों तरफ़ बर्फ़ और पहाड़ थे। कान की बाली अब हल्कीसी चमकने लगी थी — और तुलसल को लगा जैसे उसके शरीर में एक नई ताकत भर गई हो।

वो हिमालय की बर्फीली चोटियों पर भटकने लगा — बिना दिशा के बस चलते हुए।

एक रात जब वो एक मोटी सी पेड़ की डाल को सहारा बनाकर उस पर लिपटकर सो रहा था तभी एक विशाल हिमालयी जनजाति के पुरुष की नज़र उस पर पड़ी।

उसने बिना देर किए तुलसल को जकड़ लिया।

तुलसल की आँखें तुरंत खुलीं — और वो उस आदमी को देखकर सन्न रह गया।

उसकी ऊँचाई लगभग 8–9 फीट थी और शरीर देख कर ऐसा लगता था मानो अभी-अभी जिम से निकला हो।

रात के अँधेरे में वो बिना किसी रोशनी के बिना कहीं टकराए एकदम सटीक रास्ता चल रहा था।

जबकि तुलसल को सब कुछ धुँधला-धुँधला दिखाई दे रहा था।

और वो अकेला नहीं था — वहाँ कई और लोग भी थे जो एक हाथ से बड़ी-बड़ी चट्टानें उठा रहे थे।

तुलसल हैरान था — ये लोग रात में इतनी स्पष्टता से कैसे देख रहे थे

असल में हिमालय की उस जनजाति के लोग एक विशेष जड़ीबूटी का सेवन करते थे जिससे उन्हें अँधेरे में भी साफ़ दिखता था।
लेकिन अब वह बूटी लगभग विलुप्त हो चुकी थी

तुलसल ने वह बूटी कभी नहीं खाई थी — इसलिए उसे सब कुछ धुँधला ही दिख रहा था।

कुछ देर बाद उसे राजा के सामने ले जाया गया।

ज़मीन के बहुत भीतर — गहराई में — एक विशाल और सुंदर महल था।
तुलसल ने इतना भव्य महल कभी नहीं देखा था।
उसे लग रहा था जैसे वह कोई खिलौना हो — सबके बीच अकेला छोटा और निरीह।

सभा में लगभग 200 लोग मौजूद थे।
राजा और उसका पुत्र साथ में सिंहासन पर बैठे थे।

तुलसल दौड़कर गया ज़मीन पर माथा टेका और अपने नाखूनों से ज़मीन खुरचने लगा।

महाराज मैं अपनी इच्छा से नहीं आया।

मुझे एक व्यक्ति यहाँ उठा लाया।

मैं जानता हूँ कि मेरे इस धरती पर कदम रखने से आपकी ज़मीन अपवित्र हो गई होगी।

कृपा करके मुझे बेहराम मौत मत दीजिए ।

मैं जहाज़ से जानबूझ कर नहीं आया वो डूब गया — और मैं गलती से बच गया।

मैं जानता हूँ कि मेरी ज़िंदगी मेरे मालिक की सेवा में है —

मेरे बच्चे और उनके बच्चे भी बिना धन लिए मालिक के अधीन हैं।

अगर आपकी थोड़ी सी दया हो तो कोई और मालिक दे दीजिए — मैं उसकी सेवा कर लूंगा।

राजा ने एक ज़ोरदार गर्जना के साथ उसे चुप रहने का आदेश दिया और पूछा

कहाँ से आया है तू

तुलसल ने काँपते हुए जवाब दिया

नंदपुर गाँव में रहता था अब मालिक के साथ जहाज़ों पर घूमता हूँ।

राजा ने अगला प्रश्न किया

तेरे माता-पिता का नाम क्या है क्या उन्होंने तुझे बेच दिया

तुलसल ने सर झुकाए हुए कहा

नहीं भगवन... मेरी माँ तो बहुत ही नेक दिल थीं।

बापू को मैंने कभी नहीं देखा... माँ कहती थीं — जिस दिन मैं पैदा हुआ उसी दिन पिता चल बसे। वो लंबे समय से बीमार थे।

माँ अब शायद घर पर हों... और मेरी बहन... मेनिका... वो कहीं गई हुई है — माँ ने यही कहा था।

फिर एक दिन एक सैनिक आया और बोला — मेरी माँ और बहन ने नया मकान ले लिया है वो पानी वाला घर... जिसे आप जहाज़ कहते हो।

मैं बहुत खुश हुआ... उनसे मिलने उस पानी वाले घर की ओर भागा।

पर जब पहुँचा... तो कोई नहीं था।

सैनिक ने कहा — वो तुझसे मिलने ही निकली हैं। और जहाज दौड़ा दिया।

और तब से मैं जहाज़ों पर मालिक के साथ घूम रहा हूँ — माँ और बहन की एक झलक की उम्मीद में।

तुलसल की आवाज़ भर्रा गई।

उसने घुटनों के बल बैठते हुए कहा

राजन अब शायद जब कभी मैं फिर उनके पास पहुँचूँगा... तभी उन्हें देख पाऊँगा।

और उन दोनों का सारा खर्च मेरे मालिक उठाते हैं...

इसीलिए मेरी आगे की पीढ़ियाँ भी बिना कोई दाम लिए मालिक की सेवा

में रहेंगी।

सच कहूँ तो मेरे मालिक बहुत अच्छे हैं — हर रोज़ एक वक़्त खाना देते हैं।

सभा में कुछ लोग धीमे-धीमे मुस्कुरा दिए।

राजा और उसका पुत्र अब गौर से एक-दूसरे को देख रहे थे।

राजा ने धीरे से पूछा

तेरी माँ का नाम क्या था...

तुलसल कुछ पल चुप रहा फिर बोला
देवी।

एक पल को सभा में सन्नाटा छा गया।

राजा के चेहरे पर अब गहराई से कुछ सोचने की लकीरें थीं।

उसका पुत्र भी ध्यान से तुलसल को देख रहा था — जैसे कोई पुरानी परछाईं उसे छू गई हो।

जल्द ही सब खड़े हुए और अपने औजारों को ज़ोरज़ोर से बजाने लगे। जैसे किसी अनजानी रस्म की तैयारी हो रही हो।

नगाड़ों की गूँज पूरे वातावरण में फैल गई — हवा तक काँप उठी। राजा आगे बढ़े — उनकी लंबाई लगभग ११ फीट थी और शरीर मानो पहाड़ की तरह।

राजा का पुत्र भी खड़ा हुआ — उसकी आँखों में भी वैसी ही गहराई वैसी ही शक्ति थी।

सबके मुँह पर रहस्यमयी मुस्कराहट थी — लेकिन तुलसल को लगा ये मुस्कानें उसकी अंतिम घड़ी की गिनती कर रही हैं।

उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गई।
हथेलियाँ पसीने से भीग चुकी थीं।

अब उसे समझ आ गया —
उसकी बली चढ़ाई जाने वाली है।

एक साथ सबने पेड़-पौधों और प्रकृति के तत्वों के नाम की गर्जना की — जैसे ये कोई पुराना आदिम अनुष्ठान हो।

और तभी राजा बोले

तुम इस समुदाय के नागरिक हो — जिसकी पहचान तुम्हारे कानों में है।

(हालांकि राजा और सभी लोगों ने उसे पहली ही नज़र में पहचान लिया था, तभी तो समुदाय का एक सदस्य उसे यहाँ लाया था। वरना किसी बाहरी व्यक्ति का यहाँ आना सख्त मना था। लेकिन लोग और स्वयं राजा उसकी मानसिकता, उसकी हिम्मत और उसके भावों

को समझना चाहते थे।)

हमारी उम्र लगभग 300 वर्ष होती है।

हमारे पूर्वजों की तो 500 वर्ष होती थी।

तुम 100 वर्षों में पैदा हुए दो बच्चों में से एक हो।

तुम्हारी माता का नाम खीरदी था और तुम्हारे पिता का नाम बुराण।

तुम्हारा बड़ा भाई खीरभान है — और तुम्हारा परिवार इसी सभा में मौजूद है।

तुलसल की आँखें फैल गईं।
क्या ये सब क्या कह रहे हैं

राजा ने पूछा और तुम्हारा नाम क्या है

तुलसल ने हकलाते हुए काँपते स्वर में कहा

मेरा नाम तुलसल है महाराज।

राजा ने गंभीरता से कहा

पिता हैं हम तुम्हारे।

तुलसल का दिमाग सुन्न हो गया।
उसके पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक गई।

क्या ये कैसे हो सकता है

जो जन्म देता है वही माता-पिता होते हैं — उसने धीरे से कहा जैसे खुद को समझा रहा हो।

राजा बोले

पुत्र जन्म हमने ही तुम्हें दिया है।

तुलसल की आवाज़ टूटी जैसे कोई नमी भरी दीवार दरक गई हो

तुलसल ने पूछा- मेरी माँ कहाँ हैं

राजा का चेहरा कुछ पल के लिए ग़मगीन हो गया। फिर बोले

जब तुम्हारा जन्म होने वाला था तुम्हारी माँ बाहर की दुनिया देखना चाहती थी।
मेरे लाख मना करने पर भी वह नहीं मानी।
हम दोनों नदी किनारे पहुँचे।
तभी तुम्हारे समुदाय के लोगों ने हम पर हमला कर दिया।
मैंने तुम्हारी माँ की सुरक्षा के लिए उन्हें खदेड़ा।
और उसी समय नदी उफान पर आ गई — और तुम्हारा जन्म हुआ।

तुम्हारी माँ जो नदी किनारे थीं —
उन्होंने आख़िरी साँस तक तुम्हें बचाया

लेकिन पीड़ा इतनी गहरी थी कि उन्होंने वहीं दम तोड़ दिया।
हमने तुम्हें बहुत खोजा लेकिन तुम नहीं मिले।

तुलसल अब टूट चुका था।
आँखों से आँसू गिरने लगे — और उसका दिल भीग गया।
उसका भार अब शब्दों में बह निकला।

राजा ने सभा को बर्खास्त किया —
और तुलसल को एक कमरे में ले जाकर कहा

आराम करो पुत्र।

वेसाक तुलसल ने डर के मारे सबके सामने राजा को पिता कहा — पर उसका दिल अब भी उलझा हुआ था।
उसे सच जानना था अपनी माँ से।

सुबह हुई तो राजा तुलसल से मिलने आया।
तुलसल बोला
पिताजी अगर मैं आपसे कुछ माँगूं तो क्या मुझे मृत्यु दंड तो नहीं दिया जाएगा

राजा हँसते हुए बोले
पुत्र हो तुम मेरे तुम्हें मरने के बारे में तो मैं सोच भी नहीं सकता। जो माँगना है माँग लो — जब तक किसी को तुम्हारी माँग से बड़ा कष्ट न

पहुँचे तब तक तुम्हें कोई सज़ा नहीं दी जाएगी। यहाँ के नियम बहुत अच्छे हैं और भ्रष्टाचार से मुक्त भी। बोलो-

तुलसल बोला
मैं अपनी माँ से मिलना चाहता हूँ।

राजा फिर मुस्कराए और बोले
हा-हा क्यों नहीं — इस बात को कहने की भी आवश्यकता नहीं थी।
मैंने पूरी तैयारी कर दी है।
जाओ अपनी माँ से मिलो।

तुलसल कुछ पल रुका और फिर बोला
धन नहीं है हमारे पास किसी को भी देने के लिए

राजा बोले
पुत्र मैं राजा हूँ — पर राजा बैंक के समान होता है।
(उस समय समुदाय आज की बैंक जैसी तकनीक जानता था
धन तो होता है पर वह उसका निजी नहीं होता।)
राजा को राज्य का धन केवल राज्य की सुविधा में लगाना चाहिए —
ताकि प्रजा हमेशा सुखी रहे और भरपेट खाना खा सके।

तुलसल ने मासूमियत से पूछा
क्या आप लोग कभी भूखे नहीं रहते
कितनी बार खाना खाते हो

राजा बोले

दोपहर और रात को। और तुम्हारे जैसे छोटे बच्चे —– उन्हें पूरा दिन मिलता है।

तुलसल चौंका

पूरा दिन मतलब कभी भी भूखे नहीं

आपके यहाँ के बच्चे क्या काम करते हैं

मैं भी वही कर लूंगा —– बस मुझे भी दो समय का खाना मिल जाए बहुत है।

राजा बोले

बेटा हमारे यहाँ के बच्चे कोई विशेष काम नहीं करते।

वो केवल सीखते हैं —– जो हम करते हैं उसे देखकर पढ़ाई करते हैं।

तुलसल की आँखों में जिज्ञासा चमकी

ये पढ़ाई क्या होती है

राजा बोले

पहले अपनी माँ और बहन को ले आओ।

और हाँ —– किसी को भी हमारे बारे में पता नहीं चलना चाहिए। ठीक है,

ठीक है पिता जी कहकर तुलसल अपने पुराने घर नंदपुर गाँव की ओर निकल पड़ता है।

जब वो घर पहुँचा — पड़ोसियों से बात की।
तो उसे पता चला कि उसकी माँ और बहन की मृत्यु हो चुकी है।
हर तरफ़ से ताने बरसने लगे —

पता नहीं भारत कहाँ से लाया इस कनास को
घर आते ही बाप खा गया
और फिर माँ और बहन भी इससे अच्छा होता जिस नदी
पर मिला वहीं मर जाता
अगर ये यहाँ न आता तो आज ये दिन न आता कुछ लोग
उसे पीटने के लिए भी आगे बढ़े —
पर तुलसल किसी तरह बच निकला।

अब उसे सब समझ आने लगा —
क्यों उसकी माँ उसे घर से बाहर नहीं निकलने देती थी।

वो रोता-पीटता हुआ टूटे दिल और खाली मन के साथ वापस राजमहल लौट आया।

राजा ने पूछा
तुम्हारी माँ — प्यारी बहन — कहाँ है
क्या वो डर रही हैं उनसे कहो कि यहाँ ऊँच-नीच नहीं है।
क्या राजा क्या प्रजा — यहाँ सब एक समान हैं।

तभी तुलसल रोते हुए बोला
बहन के साथ दुष्कर्म हुआ
माँ जब न्याय माँगने राजा के दरबार पहुँची
तो वहाँ के कर्मचारियों ने माँ को ही खत्म कर डाला।
उन्होंने कहा था कि माँ को न्याय मिलेगा
लेकिन उसे मार दिया गया।
और मेरी बहन उसने आत्महत्या कर ली।
बहुतों के साथ होता है ये
पर आज मेरे साथ हुआ।

राजा की आँखें लाल हो गईं —
सारी सभा सन्न।
हिमालय की उस भूमि में जहाँ बाहरी लोगों का प्रवेश वर्षों से बंद था —
राजा को इसका कोई अंदेशा नहीं था।
पर अब राजा और प्रजा — दोनों एक साथ खड़े हो गए।

राजा ने बाकी सभा-सदस्यों की ओर देखा —
तभी सभी ने एक साथ ऐसी गर्जना की —
मानो धरती हिल गई हो।
इतनी गहरी और प्रभावशाली आवाज़ — जैसे साक्षात प्रकृति ने ललकार मारी हो।

अचानक तुलसल का बड़ा भाई खीरभान खड़ा हुआ और ग़ुस्से से बोला

मूर्ख तू इतनी सहजता से ऐसी बात कह भी कैसे रहा है
चल मेरे साथ — बता कौन हैं वो हत्यारे
मैं उन्हें ऐसी भयावह मौत दूँगा कि खुद पृथ्वी प्रलय में डूब जाएगी

तुलसल डरते-डरते सर झुकाकर बोला
नहीं हम निम्न वर्ग के हैं।
किसी भी उच्च जाति या पद वाले पर हाथ उठाने से —
ईश्वर हमें नर्क में कड़ाही में तल देंगे

इतना सुनते ही —
खीरभान एक ज़ोरदार गरज के साथ तुलसल को तमाचा जड़ देता है।
उस तमाचे में उसकी मात्र एक अंश जितनी ताक़त थी।

तुलसल ज़मीन पर गिर गया —
नाक से खून बहने लगा।

तभी राजा गम्भीर स्वर में बोले

खीरभान — बैठ जाओ

राजा ने स्वयं को संयम में लाया और बोले
ये उसकी गलती नहीं है।
गलती है — उस माहौल की जहाँ वह पलाबढ़ा है।

राजा ने आगे कहा

क्योंकि अगर हम वहाँ जाएँ —

तो तुम्हारे समुदाय की अधिकांश जनसंख्या ही मिट जाएगी।

इसलिए — हम नहीं।

तुम यहीं रहो शिक्षा लो और फिर अपने समुदाय को जाकर सुधारो।

इतना कहकर राजा ने सभा भंग कर दी।

लेकिन जब वो चलने लगे —

तो उनके पैरों के निशान पत्थर पर छपते चले गए।

ऐसा लग रहा था मानो कोई भारी औजार —

पूरी ताक़त से ज़मीन पर प्रहार कर रहा हो।

और फिर तुलसल की शिक्षा आरम्भ हो जाती है

राजा ने उसके लिए श्रेष्ठ आचार्य नियुक्त किए थे।

तुलसल की आँखों में अब भी अतीत का दर्द था

पर मन में उठ रहा था एक ज्वालामुखी — कुछ बदलने का कुछ सीखने का।

वो पढ़ता है —

जो अपनी जड़ों को नहीं जानता वो हर तूफ़ान में उखड़ जाता है।

तुलसल ने जाना कि कैसे राजाओं और आम जनों ने समय-समय पर

अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाई।

उसने सीखा — इतिहास सिर्फ तारीखों की कहानी नहीं बल्कि पैटर्न्स की समझ है जिससे भविष्य को बदला जा सकता है।

पृथ्वी केवल मिट्टी नहीं — ये राजनीति जल जंगल और जीवन की रचना है।

तुलसल ने जाना कि कैसे नदियाँ सभ्यता की रीढ़ हैं

कैसे पर्वत सीमा नहीं सुरक्षा हैं

और कैसे मौसम लोगों के जीवन और सोच दोनों को प्रभावित करते हैं।

धन सिर्फ सिक्कों में नहीं संसाधनों में श्रम में और विश्वास में होता है।

तुलसल ने सीखा कि टैक्स व्यापार विनिमय और श्रमविभाजन क्या होते हैं।

उसने समझा कि गरीबी की असली जड़ है – अवसरों की असमानता।

प्रकृति के नियम न जानो तो वो तुम्हें तोड़ देंगे — जान लो तो वो तुम्हारे लिए काम करेंगे। ऊर्जा के सिद्धांत जड़ीबूटियों की औषधीय शक्ति से लेकर ध्वनि और

प्रकाश तक —

तुलसल ने प्रकृति को पढ़ना सीखा।
अब उसे चमत्कारों की नहीं विज्ञान की समझ पर भरोसा था।

केवल ज्ञान से नहीं — विवेक से समाज चलता है।
क्या सही है क्या गलत
तुलसल ने प्रश्न पूछना सीखा।
उसने जाना कि किसी भी सभ्यता की असली पहचान — उसके कमजोर व्यक्ति के साथ किया गया व्यवहार होता है।

राजा वो नहीं जो राज करता है — राजा वो है जो सेवा करता है।
अब तुलसल केवल बली चढ़ने वाला बालक नहीं था —
वो विचारों का योद्धा बन रहा था।

तुलसल ने अपनी शिक्षा पूर्ण की और ३५ वर्ष की उम्र में हिमालय राजमहल से दूर चला गया और देवदार वृक्ष के नीचे बैठ के ८० वर्ष तक आत्मज्ञान की प्राप्ति की और फिर लोगो को जागरूक करने अपने बचपन के गाँव

नंदपुर चले गए जहा उन्होंने लोगो को बहुत से विचार दिए ।

तुलसल वाणी – इंसानियत का धर्म

हे मानव...

यदि तुम सत्य में सफल होना चाहते हो

तो धर्म से केवल पवित्रता और करुणा को ग्रहण करो।

धर्म के नाम पर न ऊँच-नीच की चर्चा करो

न शक्ति या जाति की डींग हाँको।

याद रखो —

कोई भी वर्ग जन्म से श्रेष्ठ या हीन नहीं होता।

जो ऐसा माने — वह धर्म को नहीं

केवल अपने अहंकार को पूजता है।

हे मानव

यदि तुम्हारे धर्म में ऐसे विचार हों —

जो किसी को नीचे और किसी को ऊपर ठहराते हों

तो चाहे तुम स्वयं उच्च कुल के हो या निम्न जाति के —

निर्भय होकर उसका विरोध करो।

क्योंकि धर्म वही है

जो सबको उठाता है किसी को गिराता नहीं।

जो इस भेद को मिटाएगा

वही सच्चा धर्मात्मा कहलाएगा।

और सुनो —

यदि तुम विवाह कर सको किसी और जाति में — तो करो।

और यदि नहीं भी कर सको

तो कम से कम अपने बच्चों के नाम के साथ

कभी कोई जाति कोई उपनाम कोई श्रेणी न जोड़ो।

इस तरह

तुम अपने ही वंश को विभाजन की ज़ंजीरों से मुक्त करोगे।

यही है सच्चा धर्म।

यही है अखंड भारत का सपना।

और यही है वह दीपक

जो हर अंधेरे मन में उजाला करेगा।

तुलसल वाणी – मानव और ईश्वर का सही संबंध

हे मानव...

ईश्वर से सहायता माँग — पर चापलूसी न कर।

दिन में थोड़ा समय निकाल — और

उसे स्मरण कर उसे धन्यवाद दे।

पर यह मत समझ

कि तू उन्हें जान गया है

या उन्हें रिझा सकता है —

तू इंसान है वह अनंत है।

ईश्वर न तो केवल तुम्हारी पूजा से प्रसन्न होते हैं

न ही नमन की कमी से क्रोधित।

उन्हें प्रसन्न करते हैं तुम्हारे कर्म —
तुम्हारी नियत तुम्हारा धैर्य और तुम्हारा त्याग।

जागो मानव —

दिनरात केवल मंदिरों में सिर रगड़ने से
बेहतर है किसी भूखे को रोटी देना
किसी दुखी को सहारा देना
और अपने भीतर छिपे प्रकाश को जगाना।

(मैं इस बात का विशेष रूप से ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि मैं भगवान के विरोध में नहीं हूँ।
मुझे मंदिर जाने या पूजा करने से मन नहीं हटता — बल्कि मैं पूरी श्रद्धा से मानता हूँ कि जब कोई सच्चे भाव से पूजा करता है या मंदिर जाता है, तो जो पुलकित आनंद और आंतरिक शांति मिलती है, वह कहीं और नहीं मिल सकती।

लेकिन,

सिर्फ दिन-रात मंदिरों में सिर रगड़ते रहना ही भक्ति नहीं है।

इंसानियत की सच्ची सेवा भी ईश्वर की ही सेवा है।)

अपने कर्मों में ईश्वर को ढूंढो।
अपने हाथों को मदद का माध्यम बनाओ
और
अपने मन को घमंड से दूर रखो।

और सुनो

दुष्टों से दूरी रखो —
और अगर तुम राजा हो तो उन्हें दंड देना ही धर्म है।
परंतु निर्दोषों को मत सताओ —
क्योंकि ईश्वर सबके हैं।

उन्होंने न केवल तुम्हारे धर्म के लोग बनाए हैं
बल्कि वे हर भाषा हर रंग हर देश
और हर पूजा के रूप को जानते हैं।

इसलिए —

कभी किसी और के भगवान की तुलना अपने भगवान से मत करो।

तुम इतने श्रेष्ठ नहीं
कि ईश्वर की रचना को बाँट सको।

सच्चा धर्म वही है
जो सबको जोड़ता है
और किसी को भी तोड़ता नहीं।

तुलसल वाणी – भोजन करुणा और अहिंसा पर

हे मानव...

किसी और की थाली को कोसने से पहले —
अपनी थाली को करुणा से भरना सीखो।

यह मत मानो कि केवल तुम्हारा मार्ग ही सही है —
ईश्वर ने हर जीव के लिए उसकी स्थिति और समझ के अनुसार रास्ता तय किया है।

लेकिन यदि तुम्हारे पास ऐसा भोजन है
जो **बिना किसी को मारे** मिल सकता है —
तो उसी को अपनाना तुम्हारा **धर्म और कर्तव्य** है।

सिर्फ स्वाद, आनंद, या दिखावे के लिए
किसी प्राणी की हत्या करना —
तुम्हारे भीतर **हिंसा के बीज** बोता है।

और जब मन हिंसक हो जाता है,
तो वह केवल मांस नहीं काटता —
वह **विश्वास, रिश्ते,** और **करुणा** को भी घायल करता है।

भोजन केवल शरीर की ज़रूरत नहीं —
वह आत्मा की अभिव्यक्ति है।

जो अपने भोजन में करुणा रखता है —
वह अपने कर्मों में भी सच्चा होता है।

ईश्वर ने हर जीव को जीवन दिया है —
वे तुम्हारे स्वाद के लिए नहीं,
अपने अस्तित्व के लिए जन्मे हैं।

धरती सबकी माँ है —
और उसका अन्न भी सबके लिए है।

अतः

यदि बिना हिंसा के भी पेट भर सकता है,
तो वही मार्ग श्रेष्ठ है।

और यदि कोई आज उस राह पर नहीं है —
तो उसे तिरस्कृत मत करो,
बल्कि प्रेम और समझ से **सच का रास्ता दिखाओ।**
क्योंकि परिवर्तन विरोध से नहीं —
करुणा और विवेक से आता है।

तुलसल वाणी – अधिकार स्वतंत्रता और मर्यादा पर

हे मानव...

यदि तू यह सोचता है कि
जिस जीव को तूने जन्म दिया है

या जो तेरे अधीन है —
उस पर तेरा अधिकार है

तो यह तेरा सबसे बड़ा भ्रम है।

कोई जीव किसी का गुलाम नहीं होता
और जो बनाता है उसे गुलाम —
वह सबसे बड़ा मूर्ख होता है।

याद रख
दबाव से केवल विद्रोह जन्मता है —
प्रेम से ही संस्कार।

यदि कोई जीव — मानव हो या पशु —
तेरे पास है
तो तेरा धर्म है कि
उसे आज़ादी दे
उसे ज्ञान दे
और ये सिखाए कि
जानबूझकर ऐसा कोई कर्म न करे
जिससे किसी सज्जन को दुःख पहुँचे।

किसी के वस्त्र उसकी भाषा
या उसकी रुचि पर
टिप्पणी करना या रोक लगाना —
तेरा अधिकार नहीं तेरी सीमा का उल्लंघन है।

तू स्वयं के जीवन को शुद्ध कर
दूसरों पर शासन नहीं —
सेवा और सहअस्तित्व ही धर्म है।

जो जीव को बाँधता है
वह स्वयं सबसे पहले बंधन में आता है।

और जो जीव को मुक्त करता है
वह स्वयं सबसे पहले मुक्त होता है।

इसीलिए हे मानव —
अधिकार नहीं
कर्तव्य की भाषा बोल।

और जिस दिन तू ऐसा करेगा —
तेरे भीतर ईश्वर स्वयं निवास करेगा।

तुलसल वाणी – शिक्षा का असली उद्देश्य

हे मानव...

वो हर चीज़ जो तुम्हारे जीवन को सरल बनाए
जो तुम्हें सही दिशा दिखाए और
जीवन जीने का सही तरीका सिखाए
वही असली शिक्षा है।

शिक्षा वह नहीं जो केवल किताबों में लिखी हो —
यह वह है जो तुम्हारे जीवन को अर्थपूर्ण बनाए
जो तुम्हारे अनुभवों से जुड़ी हो और
जो तुम्हारे आत्मविश्वास को बढ़ाए।

जिंदगी में किसी परीक्षा के लिए नहीं
सिर्फ अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए पढ़ो।

जो तुमसे संबंधित नहीं
जो तुम्हारे जीवन में काम न आए
वह केवल भार है।

याद रखो
शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं
बल्कि उस ज्ञान को अपने जीवन में उतारना है।

जब तुम सीखते हो तो सिर्फ अपनी मानसिकता को
विस्तारित मत करो
बल्कि अपने कर्म अपने व्यवहार और अपनी दृष्टि को भी
सुधारो।

जो जीवन में काम आता है —— वही सच्ची शिक्षा है
और वही तुम्हें जीवनभर संबल और शांति देगा।

इसीलिए पढ़ाई के नाम पर सिर्फ़ और सिर्फ़ वही ग्रहण करो
जो तुम्हारे जीवन में सचमुच सहायक हो।

आज की सोच – शिक्षा और जीवन के महत्वपूर्ण विषय

मेरे साथियों
आप जो पढ़ाई कर रहे हैं उसपर कोई सामाजिक दबाव या परीक्षा का असर न होने दें। सिर्फ़ इसलिए पढ़ाई न करें कि अच्छा नंबर आ जाए

बल्कि इसलिए पढ़ें कि आपके जीवन में जो ज्ञान और अनुभव आते हैं वे आपको सही दिशा में ले जाएं। सही शिक्षा वही है जो आपके जीवन को बेहतर बनाए न कि केवल कागज़ पर अंक प्राप्त करने के लिए।

अब जब आप शिक्षा के इस मार्ग पर चल रहे हैं तो आपको जिन विषयों का अध्ययन करना चाहिए ताकि आपके जीवन की दिशा सही हो

1. मानवाधिकार यह विषय आपको दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना और समझना सिखाता है। समाज में समानता न्याय और इंसानियत की नींव पर आधारित होना चाहिए।

2. आर्थिक सिद्धांत इस विषय को समझने से आपको अपने संसाधनों का सही तरीके से उपयोग करना आता है। यह जीवन के हर पहलु में निर्णय लेने में सहायक होता है—चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक।

3. समाजशास्त्र यह विषय समाज उसके ढांचे और उसके कार्यों को समझने में मदद करता है। यह आपको मानव व्यवहार विभिन्न संस्कृतियों और सामाजिक समस्याओं को बेहतर तरीके से देखने की दृष्टि देता है।

4. राजनीतिक विज्ञान यह विषय आपको राजनीति शासन और प्रशासन की प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है। यह विषय आपको यह सिखाता है कि कैसे एक स्वस्थ लोकतंत्र काम करता है और किस प्रकार नागरिकों के अधिकारों की रक्षा होती है।

5. मानव मनोविज्ञान यह विषय आपको इंसान के विचार व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं को समझने में मदद करता है। यह व्यक्तिगत जीवन में संघर्षों को हल करने और दूसरों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाने में सहायक होता है।

6. सामाजिक न्याय और समानता इस विषय से आप सीखते हैं कि समाज में समानता और न्याय कैसे स्थापित किया जा

सकता है। यह आपको विविधता का सम्मान करने और अपने आसपास के समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित करता है।

7. पर्यावरण और पारिस्थितिकी यह विषय आपको पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थितिकी तंत्र के महत्व को समझाता है। वर्तमान समय में यह बेहद महत्वपूर्ण है ताकि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और स्वस्थ पृथ्वी छोड़ सकें।

8. इतिहास और संस्कृति अपने इतिहास और संस्कृति को समझने से हम अपनी जड़ों से जुड़ते हैं और यह हमें अपनी पहचान को समझने में मदद करता है। यह हमें अपने अतीत से शिक्षा लेकर भविष्य को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करता है।

9. स्वास्थ्य और जीवनशैली एक स्वस्थ शरीर और मानसिक स्थिति जीवन में सफलता और संतुलन के लिए आवश्यक हैं। इस विषय में सही आहार व्यायाम मानसिक शांति और जीवनशैली से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी होती है।

(और अधिक विषय के बारे में जानें जो आज की दुनिया में जरूरी है।)

अगर आप इन विषयों को सही तरीके से समझते हैं और अपनी ज़िंदगी में इनका पालन करते हैं तो न केवल आप परीक्षा में सफल होंगे बल्कि आप जीवन की कठिनाइयों का सही तरीके से सामना भी करेंगे। ये ज्ञान आपको सच्चे इंसान और समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करेगा।

शिक्षा का असली महत्व और शिक्षक की भूमिका

शिक्षा जब सही मार्गदर्शन के साथ दी जाती है तो यह एक व्यक्ति के जीवन को न केवल बेहतर बनाती है बल्कि उसे समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करती है।

1. शिक्षक की भूमिका शिक्षक केवल ज्ञान देने वाले नहीं होते बल्कि वे छात्रों के जीवन में प्रेरणा दिशा और उद्देश्य का स्रोत होते हैं। एक अच्छा शिक्षक न केवल किताबों का ज्ञान देता है बल्कि वह जीवन के महत्वपूर्ण मूल्य नैतिकता और चरित्र निर्माण पर भी जोर देता है।

- **प्रेरणा और मार्गदर्शन शिक्षक छात्रों को सही दिशा में मार्गदर्शन देता है और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है।**
- **समझ और संवेदनशीलता एक अच्छा शिक्षक अपने छात्रों की भावनाओं और जरूरतों को समझता है। वह न केवल अकादमिक बल्कि भावनात्मक विकास में भी मदद करता है।**

- **मूल्य और नैतिकता अच्छा शिक्षक छात्रों में सही और गलत की समझ पैदा करता है उन्हें जीवन के कठिन फैसलों का सही तरीके से सामना करना सिखाता है।**

2. शिक्षा का असली उद्देश्य

शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं है बल्कि एक अच्छा इंसान बनना और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना है। एक अच्छा शिक्षक यही सिखाता है कि जीवन में सही मार्ग पर चलने के लिए हमें ज्ञान और कौशल के साथ साथ अच्छे नैतिक गुणों की भी आवश्यकता है।

- समाज को सकारात्मक दिशा देना एक अच्छा शिक्षक छात्रों को सिखाता है कि वे समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएं और एक अच्छे नागरिक बनें।

- **आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास शिक्षा से आत्मनिर्भरता आती है और यह हमें अपने निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।**

3. शिक्षक और शिक्षा का रिश्ता

शिक्षक ही वह दीपक है जो ज्ञान के अंधकार को रोशन करता है। बिना अच्छे शिक्षक के कोई भी अच्छी शिक्षा पूरी तरह से प्रभावी नहीं हो सकती।

- एक अच्छा शिक्षक सिर्फ़ जानकारी नहीं देता बल्कि वह छात्रों के अंदर जीवन जीने का सही तरीका और मानसिकता विकसित करता है।

- **भावनात्मक जुड़ाव जब एक शिक्षक छात्रों के साथ सही भावनात्मक जुड़ाव बनाता है तो वह उन्हें जीवन की सच्ची शिक्षा देता है। वे शिक्षक के शब्दों को ना केवल समझते हैं बल्कि उन्हें अपने जीवन में अपनाते भी हैं।**

4. मेहनत और संघर्ष का महत्व समझाता है। वह अपने छात्रों को ज्ञान से अधिक जीवन के मूल्य और सिद्धांत सिखाता है।

- **ज्ञान और कौशल में सुधार अच्छे शिक्षक छात्रों को अपने ज्ञान और कौशल को निरंतर सुधारने की प्रेरणा देते हैं।**
- **समाज में योगदान वह छात्रों को यह सिखाता है कि ज्ञान प्राप्त करने के बाद उसे समाज के भले के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए।**

शिक्षक के बिना कोई भी अच्छी शिक्षा बेकार है भले ही शिक्षा प्रणाली में कितने ही बदलाव क्यों न आएं अगर शिक्षक अच्छा नहीं है तो उसका कोई फायदा नहीं। एक अच्छे शिक्षक के बिना कोई भी शिक्षा सिर्फ़ किताबों तक ही सीमित रह जाएगी।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य तब ही पूरा होता है जब वह अच्छे शिक्षक से मिलती है। शिक्षा का सबसे बड़ा गुण यह है कि यह जीवन के हर पहलु में प्रभाव डालती है।

एक अच्छा शिक्षक छात्रों को अपने ज्ञान से नहीं बल्कि अपने आचरण अपने दृष्टिकोण और अपने प्रेरणादायक शब्दों से शिक्षा देता है।

सिर्फ़ किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं होता बल्कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के जीवन को सुधारना उसे समाज के प्रति जिम्मेदार बनाना और उसे अपना जीवन सही दिशा में जीने के लिए सक्षम बनाना है। अच्छे शिक्षक वह हैं जो छात्रों के जीवन में बदलाव लाने के लिए प्रेरित करते हैं सिर्फ़ अंक या परीक्षा के लिए नहीं।

भारत को अखंड और विकसित बनाने के लिए

भारत की जनसंख्या लगभग 1.43 अरब होने का अनुमान है, जिसमें विविध जातियों, धर्मों और भाषाओं का अनूठा मिश्रण है।

1. जातियाँ (Castes)

भारत — एक ऐसा देश जहाँ हर रंग, हर बोली, हर परंपरा अपने-आप में खास है। लेकिन इस सुंदरता को तोड़ती है एक चीज़ — जाति के नाम पर भेदभाव।

क्या हम भूल गए कि:

जब कोई सैनिक सीमा पर शहीद होता है, तो उसकी जात नहीं पूछी जाती — वो बस "भारत का बेटा" होता है।

जब कोई बच्चा भूखा होता है, तो उसे रोटी देने वाला जात नहीं देखता — बस इंसानियत देखता है।

जब कोई डॉक्टर किसी मरीज की जान बचाता है, तो न खून की जात होती है, न सेवा की।

फिर हम क्यों बँटें?

जातियाँ पहचान के लिए हो सकती हैं, लेकिन ऊँच-नीच का आधार नहीं।

अगर रामायण में शबरी को भगवान गले लगा सकते हैं,

और बुद्ध सबसे गरीब को ज्ञान दे सकते हैं,

तो हम कौन होते हैं एक-दूसरे को छोटा समझने वाले?

हमारा संकल्प:

"ना कोई ऊँच, ना कोई नीच — हम सब एक हैं, हम सब भारत हैं!"

जाति से नहीं, कर्म से पहचान बनाओ।

नफरत नहीं, मोहब्बत फैलाओ।

भारत को अखंड बनाना है,

तो पहले हमें एक होना होगा!"

2. धर्म (Religions) — भिन्नता में भी एकता

भारत की आत्मा उसकी विविधता में बसती है। यहाँ हर धर्म का रंग, हर मज़हब की खुशबू, इस देश की मिट्टी में रची-बसी है।

- **अब एकता की बात — सच्ची और ज़मीन से जुड़ी**

हम अलग हो सकते हैं पूजा के तरीकों में — पर दिलों में तो इंसानियत ही खुदा है।

मंदिर की घंटियाँ हों या मस्जिद की अज़ान, गुरुद्वारे की शबद या चर्च की प्रार्थना — हर आवाज़ में दुआ है, नफ़रत नहीं।

जब कोई भूखा होता है, तो रोटी देने वाला उसका धर्म नहीं पूछता — बस इनसान होता है।

- **हमारा सच:**

"भारत का दिल 1.4 अरब धड़कनों से बनता है — न हिंदू से कम, न मुसलमान से ज़्यादा।"
"हम मज़हबों में नहीं, मोहब्बत में बँटें!"
"धर्म हमें नैतिक दिशा देता है, परंतु हमारी सामूहिक मंज़िल समाज में समरसता और राष्ट्रीय एकता होनी चाहिए।"

□ 3. भाषाएँ (Languages) — भाषा बदले, भावना नहीं

भारत सिर्फ़ एक देश नहीं है — ये आवाज़ों की सरगम है। यहाँ हर इलाक़ा अपनी भाषा में बात करता है, लेकिन सबका दिल एक साथ धड़कता है।

अब एकता की बात — भाषा के स्तर पर

कोई "नमस्ते" कहता है, कोई "सलाम", कोई "वणक्कम", कोई "सत श्री अकाल" — लेकिन सबके पीछे एक ही

जज़्बा होता है: आदर और अपनापन।
भाषा हमें जोड़ती है, बशर्ते हम उसे दूसरे पर थोपें नहीं,
बल्कि सीखें और सम्मान दें।
जब देश की बात आती है, तो हम सब एक भाषा बोलते हैं — "भारत सबसे पहले!"

- **हमारा संदेश:**

"हम हिंदी बोलें या तमिल — दिल तो भारतीय ही बोलता है।"
"भाषा माध्यम है, मतभेद नहीं — यही है भारत की असली सुंदरता।"
"जिस देश में हजारों बोलियाँ हैं, वहाँ झगड़े नहीं, जश्न होने चाहिए!"

मैं एक हिंदू हूँ... लेकिन सबसे पहले मैं एक इंसान हूँ

मैं एक हिंदू हूँ — और मुझे मेरे धर्म ने कभी नहीं सिखाया कि मैं किसी जीव को अपने स्वार्थ के लिए मारूं,
किसी को नुकसान पहुंचाऊँ,
किसी को पीड़ा दूँ।

मुझे सिखाया गया है कि

मेरे कारण किसी और को नुकसान ना हो, चाहे मुझे थोड़ी तकलीफ क्यों न सहनी पड़े।

अगर कोई भूखा है और मुझसे मदद मांग रहा है, और अगर मेरे पास है —

तो उसे मना करना पाप है।

किसी महिला को गलत नजरों से देखना तो दूर —

जो देखे उसका भी विरोध करना धर्म है।

लेकिन आज की दुनिया...

आज मैं देखता हूँ कि

जब कोई किसी को गलत कर रहा होता है — चाहे वो मार रहा हो, लूट रहा हो, डराया-धमकाया हो —

लोग चुपचाप निकल जाते हैं।

क्यों?

क्योंकि सोचते हैं —

"हमसे क्या मतलब?"

"हमारे साथ तो नहीं हो रहा..."

पर भाईयो, सुन लो —
कल यही आग तुम्हारे दरवाज़े तक भी आएगी।
और तब कोई तुम्हारी भी मदद नहीं करेगा — जैसे तुम किसी की नहीं कर पाए।

- **शुरुआत तुम्हें ही करनी होगी**

भाई, अगर ज़रूरत पड़े तो जान देकर भी किसी की मदद करो —

यही तुम्हें अमर बना देगा।

तुम शुरू करोगे —
लोग तुम्हें देखकर प्रेरित होंगे।
तुम एक बनोगे — हज़ार पीछे चल देंगे।

- **आओ, साथ जुड़ें...**

सिर्फ़ बातें नहीं, काम करेंगे।
बदलाव का बीज हम खुद बनेंगे।
और फिर हर दिशा में ईमानदारी, सेवा और मानवता की फसल उगेगी।

- **अंत में बस इतना...**

"धर्म सिर्फ़ पूजा का नाम नहीं,
धर्म है — जो सही है, उसका साथ देना।"

"देश को बदलना है?
तो पहले खुद को बदलो।
शुरुआत तुम्हीं से होगी।"

जय हिन्द। जय मानवता। जय भारत।

जय अखंड भारत

जय अखंड भारत-"इस नारे का उद्देश्य किसी भौगोलिक या राजनीतिक विस्तार का समर्थन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकता की भावना को व्यक्त करना है।"

!!!!!!!!!!!